काम मुकम्मल हो गया

अल-मसीह की मौत

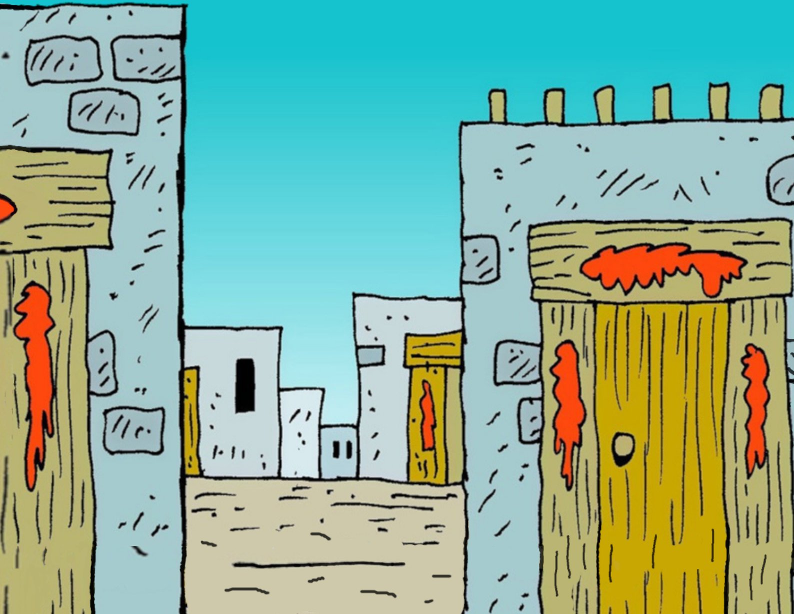

kām mukammal ho gayā hai. al-masīh kī maut

It Is Finished. The Death of Al-Masih

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 34]

(Urdu—Hindi script)

© 2024 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is derived from R. Gunther
https://www.freebibleimages.org/illustrations/ls-passover/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

सलीब	1
यहूदियों का बादशाह	2
कपड़ों की तक़सीम	2
मरियम की फ़िकर	3
प्यास	4
काम मुकम्मल हो गया है	6
छेदा हुआ पहलू	7
यूहन्ना की पक्की गवाही	8
मसीह नजात देनेवाला लेला है	11
मसीह पाक करनेवाला चश्मा है	12
दफ़न	13
इंजील, यूहन्ना 19:16b-42	15

सलीब

यहूदी राहनुमाओं के उकसाने पर रोमी गवर्नर पीलातुस ने हुक्म दिया कि ईसा मसीह को सलीब पर चढ़ाया जाए। तब उसे सलीब पकड़ा दी गई और फ़ौजी उसके साथ चल पड़े। दूसरी अनाजील इसके गवाह हैं कि ईसा मसीह कोड़ों के बाइस काफ़ी कमज़ोर हो गया था। रास्ते में उसकी ताक़त जवाब दे गई। तब फ़ौजियों ने एक गुज़रनेवाले को यह लकड़ी उठाकर ले जाने पर मजबूर किया।

चलते चलते वह शहर से निकलकर सज़ाए-मौत की जगह पर पहुँच गए। जगह का नाम खोपड़ी था। यह शहर की चारदीवारी के क़रीब ही थी जहाँ से लोग तमाशा देख सकते थे। वहाँ फ़ौजियों ने उसे सलीब पर चढ़ा दिया। उसके बाएँ और दाएँ हाथ उन्होंने दो मुजरिमों को मसलूब किया।

► **मसलूब करने का क्या तरीक़ा था?**

फ़ौजी, हाथों और पाँवों में बड़े कील ठोंककर मुजरिम को सलीब से लटका देते थे।

यहूदियों का बादशाह

इतने में पीलातुस ने एक तख़्ती बनवाकर उसे ईसा मसीह की सलीब पर लगवा दिया। तख़्ती पर लिखा था, 'ईसा नासरी, यहूदियों का बादशाह।' बहुत-से यहूदियों ने यह पढ़ लिया, क्योंकि यह मक़ाम शहर के क़रीब था और यह बात अरामी, लातीनी और यूनानी ज़बानों में लिखी थी। यह देखकर राहनुमा इमामों ने एतराज़ किया, "'यहूदियों का बादशाह' न लिखें बल्कि यह कि 'इस आदमी ने यहूदियों का बादशाह होने का दावा किया'।"

पीलातुस ने जवाब दिया, "जो कुछ मैंने लिख दिया सो लिख दिया।"

► **पीलातुस क्यों अड़ा रहा?**

पीलातुस ज़ालिम था, और उसे उन्हें दिक़्क़त पहुँचाने में मज़ा आता था। लेकिन अनजाने में उसने इस तख़्ती से एक गहरी हक़ीक़त का एलान किया।

► **उसने किस हक़ीक़त का एलान किया?**

यह कि ईसा मसीह सचमुच बादशाह है। वह इस दुनिया में आया ताकि पहले यहूदियों और फिर पूरी दुनिया का बादशाह बने।

कपड़ों की तक़सीम

ईसा मसीह को सलीब पर चढ़ाने के बाद फ़ौजियों ने उसके कपड़े लेकर चार हिस्सों में बाँट लिए, हर फ़ौजी के लिए एक हिस्सा। यह भी एक रोमी रिवाज था। लेकिन चोग़ा बेजोड़ था। वह ऊपर से लेकर नीचे तक

बुना हुआ एक ही टुकड़े का था। इसलिए फ़ौजियों ने कहा, "आओ, इसे फाड़कर तक़सीम न करें बल्कि इस पर क़ुरा डालें।" यों ज़बूर की यह पेशगोई पूरी हुई, "उन्होंने आपस में मेरे कपड़े बाँट लिए और मेरे लिबास पर क़ुरा डाला।"

► **इस पेशगोई का ज़िक्र कहाँ हुआ था?**

यह पेशगोई ज़बूर 22:18 में पाई जाती है। यह ज़बूर अल-मसीह की तकलीफ़देह मौत की पेशगोई करता है।

मरियम की फ़िकर

कुछ औरतें ईसा मसीह की सलीब के क़रीब खड़ी थीं—उसकी माँ, उसकी ख़ाला, क्लोपास की बीवी मरियम और मरियम मग्दलीनी। ईसा मसीह ने अपनी माँ को उस शागिर्द के साथ खड़े देखा जो उसे प्यारा था। उसने कहा, "ऐ ख़ातून, देखें आपका बेटा यह है।" उस शागिर्द से उसने कहा, "देख, तेरी माँ यह है।" उस वक़्त से उस शागिर्द ने ईसा मसीह की माँ को अपने घर रखा।

► **यह कौन-सा शागिर्द था जो उसे प्यारा था?**

बेशक यह यूहन्ना रसूल था जिसने इंजील का यह बयान लिखा।

► **उसने अपने नाम का ज़िक्र क्यों नहीं किया?**

हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि वह भी यहया बपतिस्मा देनेवाले की-सी सोच रखता था जिसने फ़रमाया था कि मसीह बढ़ता जाए

जबकि मैं घटता जाऊँ (यूहन्ना 3:30)। वह नाम-दाम कमाने के चक्कर में नहीं आना चाहता था।

► **ईसा मसीह ने मरियम और शागिर्द से यह बात क्यों की?**

मौत के रूबरू भी उसे मरियम की फ़िकर थी। वह चाहता था कि यह शागिर्द उसकी देख-भाल करे।

प्यास

इसके बाद जब ईसा मसीह ने जान लिया कि मेरा मिशन तकमील तक पहुँच चुका है तो उसने कहा, "मुझे प्यास लगी है।" इससे भी ज़बूर की एक पेशगोई पूरी हुई।

► **कौन-सी पेशगोई पूरी हुई?**

एक ज़बूर में लिखा है,

> उन्होंने मेरी ख़ुराक में कड़वा ज़हर मिलाया, मुझे सिरका पिलाया जब प्यासा था।
>
> (ज़बूर 69:21; बमुक़ाबला ज़बूर 22:15)

► **यूहन्ना यह बात क्यों बयान करता है?**

पहले, वह कहना चाहता है कि यह पेशगोई पूरी हुई। लेकिन इससे बढ़कर वह इन तमाम दुखी बातों से इस पर ज़ोर देना चाहता है कि मसीह ने सचमुच सख़्त दुख उठाया। सलीबी मौत के कुछ साल बाद

चंद-एक ग़लत उस्ताद कहने लगे थे कि ऐसी अज़ीम हस्ती दुख नहीं उठा सकती। उनके ख़याल में वह सिर्फ़ देखने में दुख उठा रहा था। यूहन्ना फ़रमाता है कि हरगिज़ नहीं! ख़ुदा के फ़रज़ंद ने इनसान बनकर हमारी जगह दुख सहा ताकि हमें नजात देकर अपनी बाद-शाही में शामिल करे। लाज़िम था कि वह पूरे तौर पर ख़ुदा भी हो और इनसान भी। अगर वह सिर्फ़ ख़ुदा होता तो वह अपनी जान इनसान की जगह न दे सकता। और अगर वह सिर्फ़ इनसान होता तो इनसान को उसकी क़ुरबानी से कोई मतलब न होता। यह बात ग़लत है कि वह सिर्फ़ ख़ुदा है। वह पूरे तौर पर इनसान भी है। मैंने अपनी आँखों से देखा कि वह मौत तक दुख उठा रहा था।

मेरे दोस्त, यह बात सच्चे ईमान का बुनियादी सतून है। सच्चा शागिर्द वही होता है जो यह बात माने। सच्चा शागिर्द जानता है कि मैं अपनी नजात ख़ुद हासिल नहीं कर सकता। सिर्फ़ ख़ुदा का फ़रज़ंद जो पूरे तौर पर ख़ुदा और पूरे तौर पर इनसान है मुझे यह नजात देकर नूर में ला सकता है। मेरा इसमें कोई हिस्सा नहीं है।

इस बुनियादी सोच से हमारा ईमान दुनिया की हर दूसरी सोच से फ़रक़ है। नजात मिलने के लिए हमें पहले हथियार डालकर मानना पड़ता है कि ऐ मसीह, तू ही सब कुछ है। मैं अपनी ही ताक़त से नजात हासिल नहीं कर सकता। तेरा ही नूर मुझे बदल सकता है।

► **अच्छा, आप यह बात नहीं मानते?**

मेरे अज़ीज़, अपने इर्दगिर्द देखो। क्या एक नज़र साबित नहीं करती कि सबके सब टेढ़े-मेढ़े हैं? सबके सब गुनाह में फँसे हुए हैं। यह बात अलग कि हर एक अपने आपको ठीक-ठाक और अच्छा इनसान समझता है चाहे वह कितना झूठ क्यों न बोले, कितनी बेईमानी क्यों न करे। जितना कोई ख़ुदा की क़सम खाए उतना ही वह मशकूक निकलता है। जितना कोई कर दिखाए कि मैं बड़ा फ़रिश्ता हूँ उतना ही वह होते होते शैतान साबित होता है।

सिर्फ़ और सिर्फ़ ख़ुदा हमारी हालत बदल सकता है। सिर्फ़ ईसा मसीह की सच्चाई, उसका नूर, उसका अबदी पानी और अबदी रोटी हममें तबदीली ला सकती है।

► **क्या वजह है कि सिर्फ़ ईसा मसीह हममें तबदीली ला सकता है?**
वजह यह है कि हमारी अपनी कोशिशें बकवास ही हैं। सिर्फ़ वह जो अच्छा चरवाहा है हममें पक्की तबदीली ला सकता है।

काम मुकम्मल हो गया है

क़रीब मै के सिरके से भरा बरतन पड़ा था। उन्होंने एक इस्पंज सिरके में डुबोकर उसे ज़ूफ़े की शाख़ पर लगा दिया और उठाकर मसीह के मुँह तक पहुँचाया। जो अबदी ज़िंदगी का सरचश्मा है उसे घटिया क़िस्म का सिरका पिलाया गया। यह सिरका पीने के बाद वह बोल उठा, “काम मुकम्मल हो गया है।” और सर झुकाकर उसने अपनी जान अल्लाह के सुपुर्द कर दी।

► **कौन-सा काम मुकम्मल हो गया था?**

नजात का काम मुकम्मल हो गया था। ईसा मसीह को दुनिया में भेजा गया था ताकि वह मौत और गुनाह पर फ़तह पाए, इनसान को नूर में लाए। उसे दुनिया में भेजा गया था ताकि वही सज़ा उठाए जो इनसान को उठानी थी। जो काम इनसान कर नहीं पाता वह उसने किया। जो उस पर ईमान लाता है उसके गुनाह मिटाए जाते हैं, और वह ख़ुदा को मंज़ूर हो जाता है। यों मसीह की मौत उसकी अनोखी ख़िदमत का उरूज थी। ऐसा काम दुनिया नहीं समझ सकती। उसकी नज़र में यह हस्ती फ़ेल हो गई। सिर्फ़ वह जो ईमान लाया है इस काम की क़दर कर सकता है।

► **यह बात कहने के बाद ईसा मसीह ने क्या किया?**

उसने अपनी जान अपने बाप के सुपुर्द की।

► **इससे हम क्या सीख सकते हैं?**

मरते वक़्त हम भी जो उसके शागिर्द हैं अपनी जान उसके सुपुर्द कर सकते हैं। तब हम सीधे उसकी गोद में आ जाएँगे जो हमारा अच्छा चरवाहा है। डरने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि उसकी भेड़ें मौत के पार भी महफ़ूज़ रहती हैं।

छेदा हुआ पहलू

तैयारी का दिन यानी जुमा था, और अगले दिन ईदे-फ़सह का आग़ाज़ था। इसलिए यहूदी नहीं चाहते थे कि लाशें अगले दिन तक सलीबों

पर लटकी रहें। उन्होंने पीलातुस से गुज़ारिश की कि वह उनकी टाँगें तुड़वाकर उन्हें सलीबों से उतारने दे।

► **टाँगें तुड़वाने से क्या होता था?**

टाँगें तुड़वाने से जिस्म को पाँवों से सहारा नहीं मिलता था और दम जल्द ही घुट जाता था।

फ़ौजियों ने दूसरे दो मुजरिमों की टाँगें तोड़ दीं, पहले एक की फिर दूसरे की। जब वह ईसा मसीह के पास आए तो उन्होंने देखा कि वह फ़ौत हो चुका है। इसलिए उन्होंने उसकी टाँगें न तोड़ीं। लेकिन तसल्ली पाने के लिए कि वह सचमुच मर गया है एक ने नेज़े से उसका पहलू छेद दिया। ज़ख़म से फ़ौरन ख़ून और पानी बह निकला।

► **ख़ून और पानी बह निकलने का क्या मतलब था?**

इसका मतलब था कि वह सचमुच मर चुका था। सायंसदान कहते हैं कि जो इनसान थोड़ी देर पहले मर गया हो उसके पहलू से ख़ून और पानी निकल सकता है। ज़िंदा इनसान से सिर्फ़ ख़ून निकलता है और कुछ देर से मरे हुए इनसान से थोड़ा ही निकलता है।

यूहन्ना की पक्की गवाही

यूहन्ना रसूल फ़रमाता है,

> जिसने यह देखा है उसने गवाही दी है और उसकी गवाही सच्ची है। वह जानता है कि वह हक़ीक़त बयान कर रहा है और उसकी गवाही का मक़सद यह है कि आप भी ईमान लाएँ। (यूहन्ना 19:35)

► **यह गवाह कौन था?**

बेशक यह गवाह यूहन्ना रसूल था जो अपने आक़ा की सलीब के क़रीब ही खड़ा था।

► **वह इस पर इतना ज़ोर क्यों देता है कि मैं इस मौत का गवाह हूँ?**

इसका ज़िक्र हो चुका है कि कुछ ग़लत उस्ताद इनकार करने लगे थे कि ख़ुदा का फ़रज़ंद दुख उठा सकता है। उनका कहना था कि ईसा मसीह नहीं मरा। इसी लिए यूहन्ना इस पर भी ज़ोर देता है कि मरियम दूसरी जानी-पहचानी औरतों समेत सलीब के बिलकुल क़रीब थीं जब ईसा मसीह मर गया। दूसरी अनाजील इसके गवाह हैं कि और औरतें भी कुछ दूर खड़ी सारा मामला देखती रहीं। हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि बहुत-से लोग शहर की मोटी मोटी चारदीवारी पर खड़े सब कुछ देख रहे थे, क्योंकि यह चारदीवारी नज़दीक ही थी। इसका ज़िक्र हो चुका है कि यह लोग सलीब की तख़्ती पर लिखी बात पढ़ सकते थे (यूहन्ना 19:20)।

यूहन्ना के बयान से साफ़ ज़ाहिर होता है कि ईसा मसीह के लिए बचना नामुमकिन ही था। सारा इंतज़ाम रोमी फ़ौजियों के हाथ में

था, और सलीब पर यों कीलों से लटकाने से चांस ही नहीं था कि वह बच जाए। यूहन्ना फ़रमाता है कि मेरी गवाही सच्ची है। मैं जानता हूँ कि मैं हक़ीक़त बयान कर रहा हूँ।

► **सच्चाई की यह बात किसकी याद दिलाती है?**

यह ईसा मसीह की याद दिलाती है जो सच्चाई का बादशाह है और जिसने पीलातुस के सामने इस सच्चाई, इस ठोस वफ़ादारी पर ज़ोर दिया था। सच्चे शागिर्द को इससे पहचाना जाता है कि वह सच्चाई बोलता है।

► **यूहन्ना की गवाही का क्या मक़सद है?**

मक़सद यह है कि सुनने और पढ़नेवाले ईमान लाएँ। इंजील का पूरा मक़सद यही है कि इनसान ख़ुदा के फ़रज़ंद ईसा मसीह पर ईमान लाकर नजात पाए।

► **यह बात इतनी अहम क्यों थी कि मसीह के पहलू से ख़ून और पानी बह निकला?**

यूहन्ना इसका जवाब देता है,

> यह यों हुआ ताकि कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए, "उसकी एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जा-एगी।" कलामे-मुक़द्दस में यह भी लिखा है, "वह उस पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है।"
> (यूहन्ना 19:36-37)

यूहन्ना दो पेशगोइयाँ बयान करता है जो पूरी हुईं।

► **इन दो पेशगोइयों का क्या मतलब है?**

पहली बात,

मसीह नजात देनेवाला लेला है

पहली पेशगोई ख़ुरूज की किताब में लिखी है :

> यह खाना एक ही घर के अंदर खाना है। न गोश्त घर से बाहर ले जाना, न लेले की किसी हड्डी को तोड़ना। (ख़ुरूज 12:46)

► **यह किस क़िस्म का खाना है?**

यह वह खाना है जो इसराईलियों ने मिसर से निकलने से पहले पहले खाया। जब मिसर के बादशाह ने उन्हें छोड़ने से इनकार किया तो ख़ुदा ने फ़रमाया कि मैं मिसर के हर पहलौठे को मार डालूँगा। लेकिन मेरी क़ौम इससे बच सकती है। बचने का यह तरीक़ा है : हर घराना एक लेला ज़बह करे। फिर ज़ूफ़े का गुच्छा लेले के ख़ून में डुबोकर वह यह ख़ून चौखट पर लगा दे। जब हलाक करनेवाला फ़रिश्ता वहाँ से गुज़रेगा तो वह यह ख़ून देखकर ऐसे घर के पहलौठों को छोड़ेगा। लेले को उसी रात भूनकर खाना है, लेकिन उसकी हड्डियों को मत तोड़ना।

बाद में यह खाना हर साल मनाया जाता था। ईद का नाम फ़सह की ईद थी। इसी ईद के पहले दिन ईसा मसीह मसलूब हुआ। जब वह सलीब पर लटका हुआ था उस वक़्त शहर में ईद के लेले ज़बह किए जा रहे थे।

► **यह बात कि लेले की हड्डियाँ तोड़ी नहीं जाती थीं किस तरह ईसा मसीह में पूरी हुई?**

ईसा मसीह फ़सह का हक़ीक़ी लेला है। लेले की तरह उसकी हड्डियाँ तोड़ी न गईं हालाँकि दूसरों की टाँगें तोड़ी गईं। एक और बात भी इस तरफ़ इशारा करती है : ज़ूफ़े की शाख़ पर इस्पंज लगाकर उसे सिरका पिलाया गया। यह ज़ूफ़ा उस ज़ूफ़े के गुच्छे की तरफ़ इशारा है जिससे घर के चौखट पर ख़ून लगाया जाता था। ग़रज़ ईसा मसीह वह हक़ीक़ी लेला है जिसका ख़ून इलाही अदालत से छुड़ाता है। दूसरी बात,

मसीह पाक करनेवाला चश्मा है

दूसरी पेशगोई ज़करियाह नबी की है। उसमें ख़ुदा ने फ़रमाया,

> मैं दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिंदों पर मेहरबानी और इलतमास का रूह उंडेलूँगा। तब वह मुझ पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है, और वह उसके लिए ऐसा मातम करेंगे जैसे अपने इकलौते बेटे के लिए। (ज़करियाह 12:10)

नबी वह ज़माना बयान कर रहा है जब इसराईल अल-मसीह को पहचान लेगा। तब वह उसका मातम करेंगे जिसे उन्होंने छेदा था। फिर नबी फ़रमाता है,

> उस दिन [...] चश्मा खोला जाएगा जिसके ज़रीए वह अपने गुनाहों और नापाकी को दूर कर सकेंगे।
> (ज़करियाह 13:1)

मतलब है कि उस लेले से एक चश्मा खोला गया जिसके ज़रीए हर ईमान लानेवाले के गुनाहों और नापाकी को दूर किया जाएगा।

ग़रज़, जब ख़ून और पानी उस के पहलू से बह निकला तो इस से एक गहरी हक़ीक़त ज़ाहिर हुई : मसीह वह लेला है जिस का ख़ून हमें इलाही अदालत से छुड़ाता है। साथ साथ मसीह अबदी ज़िंदगी का वह चश्मा है जिस का पानी हमारे गुनाहों और नापाकी को दूर करता है।

दफ़न

बाद में अरिमतियाह के रहनेवाले यूसुफ़ ने पीलातुस से मसीह की लाश उतारने की इजाज़त माँगी। इजाज़त मिलने पर वह आया और लाश को उतार लिया।

► **अरिमतियाह का रहनेवाला यूसुफ़ कौन था?**

दूसरी अनाजील इसके गवाह हैं कि यह यूसुफ़ यहूदी अदालते-आलिया का अमीर और इज़्ज़तदार रुकन था। वह मसीह का शागिर्द भी था मगर ख़ुफ़िया तौर पर, क्योंकि वह यहूदी राहनुमाओं से डरता

था। वह मसीह को सज़ाए-मौत देने के ख़िलाफ़ था। अब उसने लाश को दफ़नाकर बड़ी मरदानगी दिखाई।

► **नीकुदेमुस भी साथ था। नीकुदेमुस कौन था?**

वह एक इज़्ज़तदार आलिम था जो ईसा मसीह से रात के वक़्त मिला था (यूहन्ना 3)। एक मौक़े पर जब यहूदी राहनुमा मसीह के ख़िलाफ़ बातें करने लगे तो उसने उसका दिफ़ा किया था (यूहन्ना 7:50-52)। यह दो जाने-पहचाने आदमी भी इसके पक्के गवाह थे कि ईसा मसीह सचमुच मर गया था।

नीकुदेमुस अपने साथ मुर और ऊद की तक़रीबन 34 किलोग्राम ख़ुशबू लेकर आया था। सिर्फ़ अमीर आदमी यह ख़रीद सकता था। जनाज़े की रसूमात के मुताबिक़ उन्होंने लाश पर ख़ुशबू लगाकर उसे पट्टियों से लपेट दिया।

► **लेकिन लाश को कहाँ दफ़न करना था?**

सबत यानी हफ़ते का दिन क़रीब था, क्योंकि यहूदी हिसाब से वह जुमे की शाम से शुरू होता था। उस दिन लाश को कहीं उठाकर ले जाना मुश्किल था। ख़ुशक़िसमती से सलीबों के क़रीब एक बाग़ था, और बाग़ में एक नई क़ब्र थी जो अब तक इस्तेमाल नहीं हुई थी।

► **यह क़ब्र कैसी बनी थी?**

> यह क़ब्र चट्टान में तराशा हुआ ग़ार यानी गुफा थी जिसकी एक दीवार में एक क़िस्म की बड़ी शेल्फ़ तराशी गई थी। इसी शेल्फ़ पर लाश को रखा गया।

फिर बड़ा पत्थर ग़ार के मुँह पर लुढ़काया गया। तो भी यहूदी राहनुमा मुतमइन न थे। उस पर मोहर लगाकर उन्हों ने क़ब्र पर पहरेदार मुक़र्रर किए। उन्हें डर था कि शागिर्द लाश को छीन लेंगे।

क्या इंजील की इस जगह पर यूहन्ना को 'ख़त्म शुद' नहीं लिखना चाहिए था? ईसा मसीह गुज़र गया था, शागिर्द डर के मारे बिखर गए थे। जो लोग पहले उसकी तारीफ़ में नारे लगाते वह अब हिम्मत हारकर अपने अपने घर चले गए थे।

इस सवाल का जवाब अगले बाब में मिलेगा।

इंजील, यूहन्ना 19:16b-42

चुनाँचे वह ईसा को लेकर चले गए। वह अपनी सलीब उठाए शहर से निकला और उस जगह पहुँचा जिसका नाम खोपड़ी (अरामी ज़बान में गुलगुता) था। वहाँ उन्होंने उसे सलीब पर चढ़ा दिया। साथ साथ उन्होंने उसके बाएँ और दाएँ हाथ दो और आदमियों को मसलूब किया। पीलातुस ने एक तख़्ती बनवाकर उसे ईसा की सलीब पर लगवा दिया। तख़्ती पर लिखा था, 'ईसा नासरी,

यहूदियों का बादशाह।’ बहुत-से यहूदियों ने यह पढ़ लिया, क्योंकि मसलूबियत का मक़ाम शहर के क़रीब था और यह जुमला अरामी, लातीनी और यूनानी ज़बानों में लिखा था। यह देखकर यहूदियों के राहनुमा इमामों ने एतराज़ किया, "‘यहूदियों का बादशाह’ न लिखें बल्कि यह कि ‘इस आदमी ने यहूदियों का बादशाह होने का दावा किया’।"

पीलातुस ने जवाब दिया, "जो कुछ मैंने लिख दिया सो लिख दिया।"

ईसा को सलीब पर चढ़ाने के बाद फ़ौजियों ने उसके कपड़े लेकर चार हिस्सों में बाँट लिए, हर फ़ौजी के लिए एक हिस्सा। लेकिन चोग़ा बेजोड़ था। वह ऊपर से लेकर नीचे तक बुना हुआ एक ही टुकड़े का था। इसलिए फ़ौजियों ने कहा, "आओ, इसे फाड़कर तक़सीम न करें बल्कि इस पर क़ुरा डालें।" यों कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हुई, "उन्होंने आपस में मेरे कपड़े बाँट लिए और मेरे लिबास पर क़ुरा डाला।" फ़ौजियों ने यही कुछ किया।

कुछ ख़वातीन भी ईसा की सलीब के क़रीब खड़ी थीं : उसकी माँ, उसकी ख़ाला, क्लोपास की बीवी मरियम और मरियम मग्दलीनी। जब ईसा ने अपनी माँ को उस शागिर्द के साथ खड़े देखा जो उसे प्यारा था तो उसने कहा, "ऐ ख़ातून, देखें आपका बेटा यह है।"

और उस शागिर्द से उसने कहा, "देख, तेरी माँ यह है।" उस वक़्त से उस शागिर्द ने ईसा की माँ को अपने घर रखा।
इसके बाद जब ईसा ने जान लिया कि मेरा मिशन तकमील तक पहुँच चुका है तो उसने कहा, "मुझे प्यास लगी है।" (इससे भी कलामे-मुक़द्दस की एक पेशगोई पूरी हुई।)
क़रीब मै के सिरके से भरा बरतन पड़ा था। उन्होंने एक इस्पंज सिरके में डुबोकर उसे ज़ूफ़े की शाख़ पर लगा दिया और उठाकर ईसा के मुँह तक पहुँचाया। यह सिरका पीने के बाद ईसा बोल उठा, "काम मुकम्मल हो गया है।" और सर झुकाकर उसने अपनी जान अल्लाह के सुपुर्द कर दी।
फ़सह की तैयारी का दिन था और अगले दिन ईद का आग़ाज़ और एक ख़ास सबत था। इसलिए यहूदी नहीं चाहते थे कि मसलूब हुई लाशें अगले दिन तक सलीबों पर लटकी रहें। चुनाँचे उन्होंने पीलातुस से गुज़ारिश की कि वह उनकी टाँगें तुड़वाकर उन्हें सलीबों से उतारने दे। तब फ़ौजियों ने आकर ईसा के साथ मसलूब किए जानेवाले आदमियों की टाँगें तोड़ दीं, पहले एक की फिर दूसरे की। जब वह ईसा के पास आए तो उन्होंने देखा कि वह फ़ौत हो चुका है, इसलिए उन्होंने उसकी टाँगें न तोड़ीं। इसके बजाए एक ने नेज़े से ईसा का पहलू छेद दिया। ज़ख़म से फ़ौरन ख़ून और पानी बह निकला। (जिसने यह देखा है उसने गवाही दी है और उसकी

गवाही सच्ची है। वह जानता है कि वह हक़ीक़त बयान कर रहा है और उसकी गवाही का मक़सद यह है कि आप भी ईमान लाएँ।) यह यों हुआ ताकि कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए, "उसकी एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जाएगी।" कलामे-मुक़द्दस में यह भी लिखा है, "वह उस पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है।" बाद में अरिमतियाह के रहनेवाले यूसुफ़ ने पीलातुस से ईसा की लाश उतारने की इजाज़त माँगी। (यूसुफ़ ईसा का ख़ुफ़िया शागिर्द था, क्योंकि वह यहूदियों से डरता था।) इसकी इजाज़त मिलने पर वह आया और लाश को उतार लिया। नीकुदेमुस भी साथ था, वह आदमी जो गुज़रे दिनों में रात के वक़्त ईसा से मिलने आया था। नीकुदेमुस अपने साथ मुर और ऊद की तक़रीबन 34 किलोग्राम ख़ुशबू लेकर आया था। यहूदी जनाज़े की रसूमात के मुताबिक़ उन्होंने लाश पर ख़ुशबू लगाकर उसे पट्टियों से लपेट दिया। सलीबों के क़रीब एक बाग़ था और बाग़ में एक नई क़ब्र थी जो अब तक इस्तेमाल नहीं की गई थी। उसके क़रीब होने के सबब से उन्होंने ईसा को उसमें रख दिया, क्योंकि फ़सह की तैयारी का दिन था और अगले दिन ईद का आग़ाज़ था।